तुम बच्चे जानते हो कि हम है ईश्वरीय और संगमयुगी सम्प्रदाय। गाया जाता है संग तारे कुसंग बोरे। अभी तुम बच्चे अनुभवी हो। ब्राह्मण अनुभवी हैं। उस तरफ है शूद्र सम्प्रदाय। वो जानते नहीं हैं। स्वच्छ बुद्धि और मलेच्छ बुद्धि। इस समय है भक्ति का राज्य। यह है ईश्वर का राज्य। इस समय तुम ईश्वरीय सम्प्रदाय हो। ईश्वर जब कहा जाता है तो मनुष्यों की बुद्धि चली जाती है ऊपर। तुम बच्चे जानते हो कि हम ईश्वरीय सम्प्रदाय है। ईश्वरीय सम्प्रदाय, आसुरी सम्प्रदाय और दैवी सम्प्रदाय। अभी तुम बच्चे ईश्वरीय सम्प्रदाय होने कारण गुप्त हो। ईश्वर है निराकार। तुम बच्चे भी अपने को निराकार समझते हो। ईश्वर ने तुमको समझाया है। वो तो कुछ समझ नहीं सकते। तुम भी शूद्र सम्प्रदाय थे। अब ब्राह्मण बने हो। वो है भक्तिमार्ग। ज्ञानमार्ग को बिल्कुल नहीं जानते। उनका कोई दोष नहीं है। तुम जानते हो साधु–सन्यासी, गुरु लोग अनेक प्रकार के हैं। गाँवों में भी साधु–संत आदि रहते हैं। गुरुओं को माथा टेकते हैं। जितना बड़ा नामीग्रामी गुरु होता है उतने ही बड़े–2 लोग सिर झुकाते हैं। वो है शूद्र बुद्धि, पतित, आसुरी सम्प्रदाय। तुम समझते हो कि हम पुरुषोत्तम संगमयुगी है। पारलौकिक बाप हमको पुरुषोत्तम बना रहे हैं। यह तुम जानते हो फिर भी भूल जाते हो। चित्र में तुम समझ सकते हो। वो पुरुषोत्तम, यह कनिष्ठ। यह दुनिया ही तमोप्रधान, तुच्छ बुद्धि है। यह कितने स्वच्छ, स्वर्ग के मालिक हैं। यह नर्कवासी, तुच्छ बुद्धि हैं। चित्र भी कितना अच्छा बनाया हुआ है समझाने के लिए। नई दुनिया को पवित्र, पुरानी दुनिया को अपवित्र कहा जाता है। बाप ने समझाया है वहाँ यथा राजा–रानी तथा... है। यहाँ तो है ही प्रजा का राज्य। अभी तुम बच्चे सारी दुनिया से बिल्कुल न्यारे हो। तुम मुख से कहते हो सभी ऐप बुद्धि हैं। ईश्वर भी कहते हैं यह है ईश्वरीय सम्प्रदाय, यह है आसुरी सम्प्रदाय। इनको तीसरा नेत्र मिला हुआ है ज्ञान का। तीसरा नेत्र, दिव्य चक्षु दिव्य बाप ही दे सकते हैं। अब तुमको कहते हैं कि हमको निश्चय कराओ कि कैसे बाप आया हुआ है। बोलो, हम प्रजापिता ब्रह्मा की संतान ब्राह्मण हैं। ब्रह्मा द्वारा रचना रचते हैं। रचता है नई दुनिया का, नए धर्म का। विनाश कराते हैं पुरानी दुनिया का। तुमको तो एडॉप्ट करते हैं। गायन है परमपिता परमात्मा ब्रह्मा द्वारा ब्राह्मण सम्प्रदाय रचते हैं। बाप आते हैं ना। हमको ब्राह्मण बनाते हैं ना देवता बनाने के लिए। इतने ढेर बच्चे हैं। बाप ने हमको ब्रह्मा द्वारा रचा, फिर हमको कहते हैं कि मुझे याद करो। यह बताना बहुत ज़रूरी है। शिवबाबा, परमपिता परमात्मा, सबका बाप कहते हैं मुझे याद करो। मुझे पतित–पावन कहते हैं, लिबरेटर कहते हैं। तो बाप कहते हैं हे बच्चों आत्माओं। अब कहेंगे तो ज़रूर शरीर द्वारा ही ना। ब्रह्मा द्वारा ही कहेंगे कि मुझे पतित–पावन कहते हैं सो ही मैं युक्ति बताता हूँ, अपने को आत्मा समझ माम् एकम् याद करो। सभी को बाप कहते हैं अपने को आत्मा समझ मुझ बाप को याद करो तो जो तुम्हारे में सतो–रजो–तमो की खाद पड़ गई है वो निकल जावेगी। भगवान मनुष्य को नहीं कहा जाता है। सदैव कहना चाहिए कि रूहानी पिता कहते हैं कि मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। सभी के लिए यह पैगाम मिलता है। नई दुनिया में पापात्मा होती ही नहीं है। धाम ही तीन हैं। शांतिधाम, सुखधाम और दुखधाम। तो है तो बहुत सहज। बोलो, बाप कहते हैं मनमनाभव। अपने को आत्मा समझो, मुझ बाप को याद करो तो सतोप्रधान बन जावेंगे। इस समय सब तमोप्रधान हैं। यह है आयरन एज्ड वर्ल्ड। सभी को बाप का परिचय देना है। यही मुख्य बात भूल जाती है। फिर वो कहते हैं कि प्रमाण चाहिए। अरे, बाप ने तो कल्प पहले भी कहा था। यह वो ही संगमयुग है। मानुष ते देवता... यह भी गायन है। सतयुग में सभी हैं पावन। इस एक बात पर ही अच्छी रीति समझावेंगे तो वो भी ख्याल करेंगे। बाप हमको ऐसे कहते हैं बाबा–2 अक्षर बहुत मीठा है। बाप ज़रूर ब्रह्मा द्वारा ही कहते है। मुझे प्रकृति का आधार लेना पड़ता है। यह बिल्कुल कॉमन अक्षर है। बाप कहते हैं इन गुरुओं आदि को अब छोड़ो। सर्व का सद्गति दाता एक ही बाप है। पतित–पावन एक ही ठहरा ना। बाकी जो भी मनुष्य मात्र हैं वो

सभी पतित हैं। बाबा–2 अक्षर बहुत मीठा है। बाबा हमको यह कहते हैं। हम अपने को आत्मा समझते हैं। हम शरीर नहीं हैं। हम आत्मा का बाप परमात्मा है। यही एक बात सुनाने से जास्ती सुनाने की दरकार नहीं रहेगी। जब तक बाप को नहीं समझे हैं तो प्रश्न पूछते ही रहेंगे। 84 का चक्र समझाना भी बहुत सहज है। पहला–2 संदेश यही है। बाप ही बच्चों को कहते हैं। सद्गति का वर्सा उनसे ही मिलता है। यह है इम्प्योर दुनिया। प्योर थी तो वाइसलेस थी। अभी विषियस है। वो है शिवालय। नाम तो पवित्र है ना। नई दुनिया को शिवालय कहते हैं। संगम पर बाप ने मनुष्य से देवता बनाया है। धीरे–2 समझते जावेंगे। राजाई स्थापन करने में समय तो लगता है ना। कितने बिछूड़े हुए हैं। कहाँ–2 से निकल आए हैं और निकल आने हैं। कोई विलायत में हैं, कोई कहाँ हैं, सब निकल आने हैं। बच्चे जानते हैं कि हम सर्विस करते रहते हैं। अधैर्य होने की बात नहीं है। ऐसे नहीं कि प्रदर्शनी में इतना माथा मारा, क्या निकला। ऐसे हार्टफेल नहीं होना चाहिए। एक बाप की याद और सर्विस। बुद्धि में बैठा रहना चाहिए कि हमें सतोप्रधान ज़रूर बनना है। बुद्धि में यही तात लगी हुई होनी चाहिए। माशूक कहते हैं आशिकों को कि मुझ माशूक को याद रखो। प्यार से कहते हैं कि मुझे याद करो तो विकर्म विनाश हो जावे। यह आखिर भूल क्यों जाते हैं? माया भुलाती ही है तो फिर याद करो। लड़ाई इसमें है। उनका तो यह धर्म है कि तुमको याद से भुलाना। तुम जानते हो आधा कल्प हम याद करते आए हैं। इसमें विचार–सागर–मंथन तो करना ही है। यह संदेश सभी को पहुँचाना है। भक्तिमार्ग में कितना अहंकार है। इसने तो बहुत गुरु किए और पूरे 84 जन्म लिए हैं। अब वापस जाने में तो खुशी होती है। बार–2 गाँठ बाँध देनी चाहिए बाप (को) याद करने की। फिर कहाँ विकार आदि की तरफ बुद्धि जा नहीं सकती। यह है गुप्त मेहनत। मुख्य है याद। उस पर बच्चों का ध्यान बहुत कम है। पहले–2 बाप का परिचय देना चाहिए। बाप कहते हैं माम् एकम् याद करो। इन बातों पर कोई आनाकानी नहीं करेंगे। नम्बरवन पावन सो ही फिर 84 जन्म लेकर पतित बनते हैं। यह राजयोग बाप बिना कोई सिखा नहीं सकते हैं। कृष्ण तो बच्चा है। हम राजयोग ऋषि हैं। सन्यासियों को घर बार छोड़ जाना होता है। बाप कहते हैं एक जन्म पवित्र बनने लिए पावन दुनिया का मालिक बन जावेंगे। वो कहते हैं कि यह नहीं हो सकता है। हम कहते हैं वाह! यह तो बहुत सहज है। यह तो है ही मृत्युलोक। अमरलोक में जाना है। तुम ब्र०कु०कु० हो। बहन–भाई हो गए हो ना। यह है युक्ति। हम ब्राह्मण बहन–भाई अपवित्र नहीं हो सकते हैं। हम पवित्र बन जावेंगे तो पवित्र दुनिया भी चाहिए। इसलिए अपवित्र दुनिया का विनाश होता है। बाप ने खुद कहा है कि यह रावण राज्य, आसुरी सम्प्रदाय है। अंधश्रद्धा से सबकी भक्ति करते रहते हैं। पहले–2 बाप का परिचय देना है, नहीं तो इतना असर नहीं होता है। बेहद का बाप है, उनसे हमको वर्सा मिलता है। अभी वो समय है। घड़ी पर ले आना चाहिए। अभी हम वापस जाने लिए पुरुषार्थ कर रहे हैं। थोड़ा–2 इशारे से समझाना चाहिए। रग भी देखनी होती है। तुम बच्चों को नेष्ठा के प्रोग्राम बहुत आते हैं; क्योंकि सारे दिन में याद नहीं करते हो, भूल जाते हो; इसलिए प्रोग्राम देते हैं कि कुछ विकर्म विनाश हो जावे। प्रदर्शनी लिए भी पुरुषार्थ चलता है तो अपने को पावन बनाने लिए भी पुरुषार्थ चलता है। बच्चों को बाप मत देते रहते हैं कि गृहस्थ व्यवहार में भी भल रहो; परन्तु अपने माशूक को याद करते रहो। वो आशिक–माशूक भी पवित्र रहते हैं। गंदे नहीं होते हैं। यहाँ तो है आत्मा और परमात्मा की बात। बाप कहते हैं आधा कल्प के तुम आशिक हो मुझ माशूक बाप के। यह भी समझाने के लिए ही कहा जाता है। बाप से ज्ञान सुनते रहते हो। बाप सब वेदों–शास्त्रों का सार जानते हैं। इनमें प्रवेश कर समझाते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से सुनावेंगे तो ज़रूर प्रवेश ही करेंगे ना। नहीं तो कैसे बोलेंगे? तुम हमारे मुख से बोल सकेंगे? ज़रूर आत्मा ही प्रवेश करेगी ना। तो बाप कहते हैं हम इनमें प्रवेश कर शास्त्रों का सार सुनाता हूँ। वो है सारा भक्तिमार्ग। अब तुमको अव्यभिचारी याद में रहना है। यही मेहनत है। जितना हो सके बाप को ही याद करते रहो। अच्छा, बेहद के मात–पिता, बापदादा का आज्ञाकारी, सपूत, श्रीमत धारी बच्चों को यादप्यार बाद गुडनाइट। ओम।